आजकल जनसाधारण को गंभीर पुस्तकें पढ़ने में रुचि कम है. इतना समय भी नहीं होता. इस को ध्यांन में रखते हुए अंग्रेज़ी और हिंदी में मोहयाल इतिहास का संक्षिप्त विवरण एक लघु पुस्तिका - A SYNOPSIS OF MOHYAL HISTORY/**मोहयाल इतिहास प्रवेशिका** - के रूप में तैयार किया गया है. ध्येय यह है कि इसकी एक प्रतिलिपि हर मोहयाल परिवार में पहुंच सके. अब तक दो हज़ार से अधिक प्रतिलिपियाँ मोहयाल सभाओं द्वारा उनके समारोहों पर निशुल्क बांटी जा चुकी हैं. आप भी अपने लिए या मुंडन/विवाह आदि पर बांटने के लिए मोहयाल सभा, पंचकूला से निशुल्क मंगवा सकते है.

पहले ऐसे समारोहों पर मोहयालों के "भाट" (चारण) आ क़र "मोहयाल कहावन कठन है , मुख कहे न हो मूहियाल ...' आदि प्रेरणात्मक तथा उत्साहवर्धक ‘कवितें’ गा क़र सब को प्रभावित करते थे. अब हम ने स्वयं नई पीढ़ियों को 'मोहयालियत’ के बारे में प्रशिक्षित करना है. मोहयाल इतिहास के एक अधिप्रमाणित रूपांतर की लघु पुस्तिका यदि घर में पड़ी होगी तो घर के सभी सदस्य कभी कभी अपने पूर्वजों की गौरव गाथाएं पढ़ कर लाभान्वित हो सकें गे. हिंदी में 'मोहयाल इतिहास प्रवेशिका' यहां उद्धृत कर रहे हैं. यह विचार आप को अच्छा लगे तो आप भी इस पुस्तिका की प्रतिलिपियाँ बांटनें में रूचि लें.

मोहयालों का आत्मसम्मान ही 'मोहयालियत ' है और यह इस भावना से उभरता है की हम अपने गौरवशील अतीत का वंशागत भाग हैं.

मोहयाल इतिहास प्रवेशिका

मोहयाल प्रवर ऋषियों की संतान हैं. हर जाति का गोत्र उस के पूर्वज ऋषि के नाम से जाना जाता है. मोहयाल जाति के गोत्र ऋषियों के नाम इस प्रकार हैं. बाली (प्राशर), भीमवाल (कोशल), छिब्बर (भृगु), दत्त (भरद्वाज), लौ (वसिष्ट), मोहन (कश्यप), और वैद (भरद्वाज/धनवंत्री).

2. हिन्दू विवाह अब भी प्राचीन विवाह पद्धिति के अनुसार होते हैं. इस अनुष्ठान के दौरान दूल्हे को अपनी पहचान देनी होती है. इसके लिए वह अपना नाम, पिता का नाम, दादा का नाम और अपने कुल का गोत्र घोषित करता है (गोत्रोच्चार). इस प्रकार की परम्पराओं से हिंदुओं ने हजारों वर्ष तक अपने गोत्रों के नाम याद रखे हैं.

3. सातवीं शताब्दी में अरब देश में इस्लाम का प्रादुर्भाव हुआ. शीघ्र ही इराक, सीरिया (635), मिस्र (639), ईरान (640), त्रिपोली (647) और उत्तर-पश्चिम अफ्रीका (670) तक के सब देश इस्लाम धर्मावलम्बी अरबों ने जीत लिए. खुरासान और मध्य एशिया के कुछ भाग भी अरब खलीफा के आधीन हो गए.

4. **अफ़ग़ानिस्तान में अरबों की असफलता**

अफ़ग़ानिस्तान के मध्य में हिन्दू कुश नाम की पर्वत श्रिंखला है. इस कोह हिन्दू कुश के दक्षिण में, दर्रा खैबर से ईरान की सीमा तक का दक्षिण अफ़ग़ानिस्तान का भूभाग - काबुल और याबुल - उस समय दो हिन्दू राजाओं के अधीन था. भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापर इसी मार्ग से हो कर जाता था. भरसक प्रयत्न करने पर भी अरब महान विजेता इन हिन्दू राज्यों पर कब्ज़ा नहीं कर सके. उस समय के दक्षिण-पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान (याबुल) के (क्षत्रिय) हिन्दू राजा को मुस्लिम इतिहास में "रुतबिल" के नाम से जाना जाता है. रुतबिल ने 698 में एक विशाल आक्रमणकारी अरब सेना को पहाड़ी इलाके में घेर कर पूर्णतया ध्वस्त दिया. उसके पश्चात् अरबों ने दक्षिण अफ़ग़ानिस्तान पर हमला करने का साहस नहीं किया.

5. **सिंध में छिब्बर राजे.** छछ, उसके भाई चन्दर और बेटे डाहर ने 632 से 712 ई तक सिंध में राज किया. वह आज की मोहयाल छिब्बर जाति के पूर्वज थे. कश्मीर और ईरान की सीमाओं के बीच, उत्तर भारत का एक विस्तृत भूभाग, उनके आधिपत्य में था. अरब समुद्र तथा भूमि के रास्ते बार बार सिंध पर आक्रमण करते रहे पर उस राज्य के किसी भाग पर कब्ज़ा नहीं कर सके. अफ़ग़ानिस्तान में अपनी भारी विफलता से हताश हो कर, 712 में खलीफा राज्य की पूरी शक्ति से अरबों ने सिंध पर अपना 15वां आक्रमण किया. सिंध का पराक्रमी राजा डाहर जो अरबों को कई बार हरा चुका था इस युद्ध में मारा गया. गुजरात, राजस्थान और पंजाब के पड़ोसी राज्यों ने अरबों को सिंध में ही सीमित रखा पर वहाँ से उन्हें खदेड़ बाहर करने की कोशिश नहीं की.

6. धीरे धीरे अरबों की शक्ति घटने लगी. पूर्व में जो लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हो गए थे, वह ईरान और कोह हिन्दू कुश के बीच, खुरासान और मध्य एशिया अदि में जहां पहले अरब खलीफा का प्रभुत्व था, वहां अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित करने लगे. इनमें से एक सीस्तान के " सफार" राजवंश के याकूब नाम के शासक ने संधि करने के बहाने से 870 में हिंदू राजा रुतबल को छल द्वारा मार डाला. इस प्रकार दक्षिण-पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान भारत के पभुत्व से निकल गया.

7. **पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में दत्त शासन और पंजाब में वैद शासन.** तब तक काबुल में एक ब्राह्मण वंश का शासन हो गया था. इस समय मोहयाल दत्त वंश के पूर्वज, सामंत देव, काबुल की राजगद्दी पर आसीन थे. सामंत देव के समान ही उनके बेटे कमलवर्मन और पोते भीम देव ने बड़े गौरव और प्रभुता के साथ 960 तक काबुल में राज किया. पड़ोस में "सफार" और "सामानि" मुस्लिम शासक इतने शक्तिशाली थे के वह खलीफा को, जो सब मुस्लिम शासकों का मुखिया माना जाता था, उसको भी चुनौती देने में नहीं चूकते थे. इसके बावजूद वह काबुल के सार्वभौम दत्त राजाओं को कोई हानि नहीं पहुंचा सके. नवीं और दसवीं शताब्दी में जब दत्त काबुल में राज कर रहे थे, उस समय पंजाब में एक वैद (मोहयाल ब्राह्मण) राजवंश का शासन था. वह काबुल राज्य के सहयोगी थे. भारत और मध्य एशिया के बीच भारी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का रास्ता पंजाब और काबुल से हो कर जाता था. इन दोनों

राज्यों को करारोपण से बहुत आमदनी होती थी. कन्नौज के प्रतिहर और बुखारा के सामानि साम्राज्यों के बीच फंसे इन मोहयाल राजवंशों ने पर्याप्त "शक्ति संतुलन" बनाये रखा जिस के कारण इस सारे क्षेत्र में शांति और समृद्धि का वर्चस्व रहा.

8. सामानि शासकों ने तुर्कों का धर्म परिवर्तन कर के उनको सैनिक और असैनिक पदों के लिए प्रशिक्षत किया. धीरे धीरे सब उच्च पदों पर तुर्क नियुक्त हो गए. परिणाम स्वरुप शासक निष्प्रभ होते गए और तुर्क अधिकारी सत्ता हथियाने लगे. अलपतिगिन जो पहले एक द्वारपाल था वह राजसी सेना को परास्त कर के ग़ज़नी का स्वतंत्र शासक बन गया. यही ग़ज़नी राज्य इतना शक्तिशाली हो गया कि अंततः उनके द्वारा सामानि राज्य का विध्वंस हुआ.

9. इसी बीच काबुल के तीसरे दत्त राजा भीमदेव का पुत्र न होने के कारण, उपयुक्त उत्तराधिकारी के अभाव में काबुल के राज्य का पंजाब के साथ विलय हो गया. इस प्रकार पंजाब के वैद राजवंश के पांचवें राजा जयपाल सरहिंद से काबुल तक के विस्तृत क्षेत्र के सार्वभौम शासक बन गए.

10. राज्य की पश्चिमी सीमा पर स्थित गज़नी में एक नई शक्ति उभर रही थी. उसको कुचलने के लिए जयपाल ने दो बार गज़नी पर आक्रमण किया पर अपने ध्येय में सफल न हुआ. प्रत्याक्रमण में उसके राज्य का अफ़ग़ानिस्तान का भाग उसके हाथ से निकल गया.

11. 997 में महमूद गज़नी के राजसिंहासन पर बैठा. जयपाल के उत्तराधिकारी, जो अभी पंजाब में शासन कर रहे थे, उन्हों ने भरसक प्रयत्न किये कि महमूद पंजाब में न घुस सके. 1008 में आगे बढ़ कर, जयपाल के बेटे आनन्दपाल ने दर्रा खैबर के दक्षिण में तुर्क सेना को रोकने के लिए महमूद से युद्ध किया. मुस्लिम इतिहासकार "फरिशता" के अनुसार, "सवेरे से शाम तक युद्ध होता रहा और काफर (हिन्दू) जीतने वाले थे लेकिन अचानक ही जिस हाथी पर हिन्दू सेनापति बैठा था वह अग्नि बाणों से बिदक कर बेकाबू हो गया और भाग निकला." इस अकस्मात घटना से हिन्दू सेना में अफरा तफरी मच जाने से वह हार गई.

महमूद ग़ज़नवी ने एक विशाल सेना एकत्र कर के 1014 में पुनः भारत पर आक्रमण किया. उस समय भारत पर आनन्दपाल के बेटे त्रिलोचनपाल का राज था. त्रिलोचनपाल के बेटे भीमपाल ने आगे बढ़ कर (रावलपिंडी के समीप) मारीगल दर्रे के पीछे अपने हाथी और सैनिक नियुक्त कर के तुर्क सेना को रोक दिया. जब उसके सहयोगी सामंत पहुंच गए तब उस ने युद्ध आरम्भ होने दिया. महमूद के अपने इतिहासकार उतबी के अनुसार भीषण युद्ध चलता रहा. महमूद का एक विशेष सेनानायक भीमपाल से लड़ते बहुत ज़ख़्मी हो गया. महमूद ने अपने निजी रक्षकों की टुकड़ी भेज कर उस को बचाया. अंततः तुर्क विजयी रहे. महमूद ने आगे बढ़कर कटासराज के समीप पहाड़ी श्रिंखला में स्थित नन्दना नाम के दुर्ग व राजधानी को लूट लिया और त्रिलोचनपाल के पीछे कश्मीर की और बढ़ा. अगला युद्ध कश्मीर की सीमा पर तौसी नदी के तट पर हुआ. राजतरंगिणी में कल्हण ने इस युद्ध का सजीव वर्णन किया है. कश्मीर राज्य का सेनापति "तुंग" त्रिलोचनपाल की सहायता के लिए भेजा

गया था लेकिन त्रिलोचन के परामर्श के विरुद्ध उसकी अविवेकी जल्दबाज़ी से इस युद्ध में हिन्दू पराजित हुए. मोहयाल ब्राह्मणों का वैद राजवंश, जो लग भग दो शताब्दियों तक पंजाब पर शासन कर चुका था, उसका अंत हो गया. 1021 में महमूद के कश्मीर और लाहौर पर हमलों के पश्चात पंजाब गज़नी का एक प्रांत बना दिया गया और तुर्क गवर्नर नियुक्त होने लगे.

मोहयाल राजे दो तीन दशकों तक दृढ़ संकल्प से महमूद का रास्ता रोके रहे थे. यह बांध टूट जाने पर किसी और हिन्दू राजा ने इस तरह सुलतान महमूद का विरोध नहीं किया. वह लगभग हर वर्ष आकर भारत के राजकोषों और मन्दिरों के चिर संचित धन को लूटता रहा.

12. **मोहयालों द्वारा शासन का महत्व**

दत्त और वैद राजवंश (इतिहास में उनको ब्राह्मण हिन्दू शाही की संज्ञा से जाना जाता है) जिन्हों ने नवीं और दसवीं शताब्दी में सरहिंद से काबुल तक शासन किया, उनके योगदान का इतिहास में सही मूल्यांकन नहीं किया गया. उन्हों ने:

(1) भारत की पश्चिमोत्तरी सीमा की लगभग दो सौ वर्ष तक रक्षा की;

(2) भारत और पश्चिम एशिया/ योरूप के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुरक्षा और सुगमता प्रदान कर के उसको बढ़ावा दिया.

इस के परिणाम स्वरुप भारत पूर्ण शांति और समृद्धि का उपभोग कर सका. विदेशी आक्रमणों का भय न होने से देश के तीन मुख्य राज्य - कन्नौज के प्रतिहर, बंगाल के पाल और दक्षिण के राष्ट्रकूट - आपस में प्रभुता के लिए लड़ते रहे. इस के बावजूद देश समृद्ध रहा.

13. ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में एक ही शत्रु - महमूद गज़नवी - ने आक्सस (Oxus) और गंगा नदियों के बीच तीन साम्राज्यों को ध्वस्त कर दिया. यह थे खुरासान के सामानी, पंजाब के वैद (मोहयाल) और मध्यभारत के प्रतिहर. इन तीनों में से पंजाब के मोहयाल राजाओं ने ही जम कर उसका मुकाबला किया. जयपाल का बेटा आनन्दपाल और पोता त्रिलोचनपाल साहस और निर्भीकता से सुलतान के साथ लड़ते रहे और उतना क्षेत्र ही तुर्कों के कब्ज़े में जाता था जितना वह उस युद्ध में जीत सके. इस प्रकार शाही कहलाने वाली इस राजवंश की चार पीढ़ियों ने महमूद का रास्ता रोक कर रखा. उनका अंत दुर्भाग्यपूर्ण पर असम्मानजनक नहीं था. "हम उनको दोषी नहीं कह सकते. इन (शाही कहे जाने वाले मोहयाल राजाओं) जैसा दृढ़संकल्प उस समय के अन्य शासकों में नहीं था ." (जान कईय, *इंडिया: ऐ हिस्ट्री*) महान प्रतिहार साम्राज्य 1018 में महमूद के कन्नौज पर आक्रमण के पश्चात प्रायः समाप्त हो गया.

14. जैसा कि बताया जा चुका है याबुल और काबुल के राजाओं ने विश्वविजयी अरबों को दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान में नहीं घुसने दिया. इस के अगले तीन सौ वर्षों तक मुस्लिम शक्ति दर्रा खैबर पार

नहीं कर सकी. इसके लिए राष्ट्र को मोहयाल शासकों का भी आभारी होना चाहिए जिन्हों ने सीमा के प्रहरी बनकर देश को एक रक्षात्मक ढाल प्रदान की. परंतु यह ऐतिहासिक तथ्य भारत के इतिहास के संकलन में सामने नहीं आने दिए गये. भारत में मुस्लिम शासन के कारण विजेता का मत ही प्रस्तुत किया गया और मध्यकालीन इतिहास महमूद गज़नवी के हमलों से शरू होता है. दुर्भाग्य वश इतिहास का यह कटा छटा आकार ही अभी तक पाठ्य पुस्तकों में चल रहा है. यही कारण है कि विद्यालयों में इतिहास के पाठन में आपको अपने ओजस्वी पूर्वजों के शासन की कोई जानकारी नहीं मिली.

15. गज़नी राजवंश ने लंबे समय तक (1026-1186) पंजाब पर शासन किया. उन्हों ने कई बार गज़नी से भाग कर लाहौर (पंजाब) में शरण ली. 1030 में महमूद का निधन हो गया. एक मोहयाल राजकुमार (सुखपाल) जो जयपाल का नवासा था और महमूद की कैद में था वह मुक्त हो गया. उस ने आ कर पंजाब की नमक की पहाड़ी श्रिंखला क्षेत्र से योद्धा एकत्रित कर के 1043 में लाहौर पर आक्रमण कर दिया. सात महीने तक इस राजधानी को घेरे रखा पर इसे जीत नहीं सका. कुछ समय के पश्चात "ग़ौरी" वंश गज़नी के राजवंश को नष्ट कर गज़नी पर राज करने लगा. 1186 में मुहम्मद ग़ौरी ने पंजाब पर भी कब्ज़ा कर लिया. शेष भारत कैसे पराधीन हो गया, उसका यहां वर्णन करने की आवश्यकता नहीं.

16. **मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन**

देश में खलबली मची हुई थी. राजनीतिक अराजकता के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यतायें व परम्परायें भी सुरक्षित नहीं थीं. विदेशी बर्बर शक्ति से बचाव के लिए जनजीवन में कई फेर बदल किये जा रहे थे. उस समय हिंदुओं के पारम्परिक चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र) अनेक जातियों में बट गये. हर एक जाति का अपना पृथक गोत्र था. जातियों की टोलियों ने मिलकर आपस में ही विवाह करने के लिये "बिरादरियां" बना लीं: जैसे खुखराइन, त्यागी, भूमिहर, आदि. उस समय, 1190 में, हमारे पंजाब के शस्त्रधारी सात ब्राह्मण कबीलों ने भी बाली, भीमवाल, छिब्बर, दत्त, लौ, मोहन और वैद नाम से अलग जातियां बना लीं और इस जाति समूह (बिरादरी) को (मुहि + आल) "मुहियाल" की संज्ञा दी.

इस प्रकार बारहवीं शताब्दी में मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन हुआ. शेष सभी जातियों और बिरादरियों की रचना भी उसी काल में हुई.

17. जैसे आरंभ में कहा गया है मोहयाल प्रवर ऋषियों के वंशज हैं. उदहारणार्थ भृगु ऋषि आज के छिब्बरों के मूल पूर्वज थे. परंतु यह कहना कि भृगु छिब्बर थे असंगत और अनुपयुक्त होगा. जाति (caste) की रचना और पहचान के लिये नाम के पीछे जाति लिखने की परम्परा भृगु के समय थी ही नहीं. सिंध के छछ और डाहर राजाओं का भी ऐसा ही था. भृगु के समान वह भी छिब्बरों के पूर्वज थे.

यह कहना कि राजा छछ अपने नाम के साथ "छिब्बर" लिखता था पूर्णतया निराधार है और ऐतिहासिक लेखों में इसका कोई प्रमाण नहीं है. वैसे भी छछ के नाम के साथ छिब्बर जोड़ना ऐतिहासिक असंगति होगी क्योंकि उसके जीवन कल में भी यह परम्परा नहीं थी.

18. उपरोक्त वृतांत में हम ने छछ/भीमदेव/जयपाल या उनके राजवंशों को छिब्बर/दत्त/वैद कहा होगा. यहां पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह छूट इस लिए ली गई है कि बार बार "छिब्बर/ दत्त/ वैद के पूर्वज" न लिखना पड़े.

19. अब आप समझ गए होंगे कि:

(1) मोहयाल होने से आप प्रवर ऋषयों के वंशज हैं.

(2) मोहयालों के पूर्वज बड़े तेज, गौरव और कीर्ति के साथ भारत कि सीमाओं - आज के अफ़ग़ानिस्तान, और पाकिस्तान (पश्चिमो पंजाब, बलोचिस्तान और सिंध) - पर राज करते रहे.

(3) दीर्घकल तक उन्होंने अपनी मातृभूमि की सीमाओं को इस्लामी शक्ति के उन्माद से बचा कर रखा जिस से हमारा देश शांति और समृद्धि का उपभोग कर सका.

(4) भरसक प्रयत्नों के बावजूद यदि वह अंततः हार गये तो उनका दोष नहीं था. पड़ोस के बड़े बड़े मुस्लिम राज्य उसी आक्रमणकारी से पहले ही हार चुके थे.

कोई भी मोहयाल इस विरासत पर गर्व करेगा. मोहयालों के परम्परागत आत्मसम्मान का यही रहस्य है. आप भी इस गौरवशाली विरासत के भागीदार हैं.

20. मोहयाल इतिहास हज़ारों साल पुराना है. इसमें मोहयाल पूर्वजों के पदचिन्हों की पहचान तेरह सौ साल तक हो सकी है. यह उसकी संक्षिप्त रुपरेखा है - आपकी ***मोहयाल इतिहास <u>प्रवेशका</u>.*** विचारशील पाठकों को स्वाभाविक ही जिज्ञासा होगी कि वह स्वयं ऐतिहासिक प्रमाण देख सकें जिनपर यह तथ्य आधारित हैं. यह विस्तृत जानकारी अब इस पुस्तक में उपलब्ध है:

AFGHANISTAN REVISITED: The Brahmana Hindu Shahis of Afghanistan and the Punjab (c. 840-1026 CE)

यह पुस्तक जनरल मोहयाल सभा दिल्ली के कार्यालय से मात्र एक सौ रूप्ये में मिल सकती है.

आपको कोई संशय या प्रश्न हो या इस विषय पर कोई जानकारी देना चाहते हों तो इस पते पर निसंकोच सम्पर्क कर सकते हैं:/

R. T. MOHAN, PANCHKULA,(Haryana) : e. mail mohyalitihas@gmail.com

**** ****